

2. JUNA MAHAL – REINTERPRETING ARCHITECTURE, PAINTING, AND GLASS CRAFT (जूना महल, डूंगरपुर–स्थापत्य, चित्रकला और काँच शिल्प का पुनर्परिभाषित विश्लेषण)

Dr. Laxman Lal Sargada^{a*} Kratika Kansara^b

^a Research Supervisor, Associate Professor, Painting, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)

^b Research Scholar, Research Scholar, Department of Visual Arts, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)

^aEmail: laxmanart31@gmail.com

Abstract

Junā Mahal is a very important example of Rajasthan's rich historical and cultural heritage, recognized as a remarkable blend of architecture, painting, and glass craftsmanship. The mural paintings of this palace are its most significant feature. These paintings depict religious stories, hunting scenes, battle episodes, royal life, and romantic themes with great detail and emotional depth. This artwork not only showcases beauty but also clearly reflects the social structure, cultural traditions, and worldview of that time. In particular, the romantic (shringara) paintings present human emotions and the deeper aspects of love with artistic dignity, making it comparable to a cultural text.

Glass and mirror work is another unique feature of this palace. The inlay of small mirrors on the walls and ceilings creates an effect where light is divided into thousands of reflections, illuminating the entire room.

जूना महल राजस्थान की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो स्थापत्य, चित्रकला और काँच शिल्प के अद्भुत संगम के रूप में पहचाना जाता है। इस महल की भित्ति चित्रकला इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। इन चित्रों में धार्मिक कथाएँ, शिकार दृश्य, युद्ध प्रसंग, राजसी जीवन और शृंगारिक विषयों का अत्यंत सूक्ष्म और भावपूर्ण चित्रण मिलता है। यह चित्रकला न केवल सौंदर्य का प्रदर्शन करती है, बल्कि उस समय की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराओं और जीवन दृष्टि को भी स्पष्ट रूप से दर्शाती है। विशेष रूप से शृंगारिक चित्र मानवीय भावनाओं और प्रेम के गहन पक्षों को कलात्मक मर्यादा के साथ प्रस्तुत करते हैं, जो इसे एक सांस्कृतिक ग्रंथ के समान बनाते हैं।

काँच और दर्पण कारीगरी इस महल की एक अन्य अद्वितीय विशेषता है। दीवारों और छतों पर छोटे-छोटे दर्पणों की जड़ाई से ऐसा प्रभाव उत्पन्न होता है कि प्रकाश हजारों प्रतिबिंबों में विभाजित होकर पूरे कक्ष को आलोकित कर देता है।

Keywords: Juna Mahal, ornamentation, cultural, artistic, architectural, painting

जूना महल, शृंगार, सांस्कृतिक, कलात्मक, स्थापत्य, चित्रकला

* Corresponding author.

प्रस्तावना

राजस्थान अपनी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और उत्कृष्ट कलात्मक परंपराओं के कारण विश्वभर में विशेष पहचान रखता है। इसी सांस्कृतिक वैभव का एक महत्वपूर्ण उदाहरण जूना महल है, जो डूंगरपुर नगर में स्थित एक प्राचीन और भव्य महल है। यह केवल राजाओं का निवास स्थान भर नहीं था, बल्कि उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यबोध का जीवंत प्रतीक भी है।

इस महल की विशेषता इसकी दीवारों पर अंकित भित्ति चित्रों में निहित है, जो अतीत की भावनाओं, जीवन शैली और कलात्मक दृष्टिकोण को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों में तत्कालीन समाज, राजसी जीवन, धार्मिक मान्यताओं और मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म और सजीव चित्रण देखने को मिलता है। इसके साथ ही महल की स्थापत्य संरचना भी अत्यंत आकर्षक और सुदृढ़ है, जो सुरक्षा और सौंदर्य दोनों का संतुलन दर्शाती

है। इसके अतिरिक्त, महल में प्रयुक्त काँच और दर्पण की कारीगरी इसकी भव्यता को और अधिक बढ़ाती है। छोटे-छोटे काँच के टुकड़ों से सुसज्जित दीवारें और कक्ष प्रकाश के साथ अद्भुत खेल प्रस्तुत करते हैं, जिससे पूरा वातावरण चमक उठता है। इस प्रकार, जूना महल केवल एक ऐतिहासिक इमारत नहीं, बल्कि एक ऐसा कलात्मक केंद्र है, जो राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि, सौंदर्यबोध और जीवन दृष्टि को एक साथ अभिव्यक्त करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और निर्माण

जूना महल का निर्माण विक्रम संवत् 1339 में आरंभ हुआ, जब रावल वीर सिंह देव ने इसकी नींव रखी। यह महल लगभग 650 वर्षों तक शासकीय गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना रहा। बाहरी रूप से यह सात मंजिला दिखाई देता है, किंतु वास्तव में इसमें 9 स्तर विद्यमान हैं, जो इसे स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत विशिष्ट और रोचक बनाते हैं।

महल का बाह्य स्वरूप एक सुदृढ़ दुर्ग के समान है, जिसमें मोटी दीवारें, संकरी खिड़कियाँ और अनेक सुरक्षात्मक व्यवस्थाएँ शामिल हैं, जो इसे आक्रमणों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से निर्मित की गई थीं। इसके विपरीत, जब कोई इसके भीतर प्रवेश करता है, तो एक बिल्कुल भिन्न वातावरण का अनुभव होता है। अंदर का भाग अत्यंत कोमल, सुसज्जित और कलात्मक है, जहाँ भित्ति चित्र, सजावटी तत्व और सौंदर्यपूर्ण संरचना एक जीवंत कलाजगत का निर्माण करते हैं।

इस प्रकार, जूना महल का बाहरी और आंतरिक स्वरूप परस्पर विपरीत होते हुए भी एक अद्भुत संतुलन प्रस्तुत करता है—जहाँ बाहर सुरक्षा और शक्ति का प्रतीक है, वहीं भीतर कला, सौंदर्य और संवेदनाओं का संसार विकसित होता है।

स्थापत्य विशेषताएँ

जूना महल की संरचना अत्यंत सुनियोजित ढंग से इस प्रकार विकसित की गई है कि यह शत्रुओं के संभावित आक्रमणों से पूर्णतः सुरक्षित रह सके। इसके भीतर ऐसे अनेक सुरक्षा-उपाय अपनाए गए हैं, जिनमें घुमावदार मार्ग, तीव्र ढाल वाली सीढ़ियाँ तथा खिसकने वाले पत्थरों की व्यवस्था प्रमुख हैं। ये सभी तत्व आक्रमणकारियों को भ्रमित करने तथा महल की रक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से निर्मित किए गए थे। इस महल का निर्माण एक ही कालखंड में नहीं हुआ, बल्कि विभिन्न शासकों के निरंतर योगदान से इसका विस्तार और विकास होता रहा। इसी कारण इसकी स्थापत्य शैली में विविधता और मिश्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसमें राजपूत स्थापत्य की भव्यता के साथ-साथ स्थानीय परंपराओं का भी समावेश है।

महल के भीतर स्थित राजसी कक्ष, विशाल आंगन, सुंदर झरोखे और भव्य दरबार कक्ष इसकी शाही गरिमा और स्थापत्य वैभव को दर्शाते हैं। इनमें से 'आमखास' कक्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता था, जो शाही दरबार का मुख्य केंद्र था। यहाँ राज्य से संबंधित सभी प्रमुख निर्णय लिए जाते थे और प्रशासनिक कार्यों का संचालन होता था। इस प्रकार, जूना महल केवल एक आवासीय संरचना नहीं, बल्कि राजनीतिक और प्रशासनिक गतिविधियों का भी प्रमुख केंद्र रहा है।

चित्रकला

जूना महल की भित्ति चित्रकला इसकी सबसे विशिष्ट और महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक मानी जाती है। इस चित्रकला में विविध विषयों का अत्यंत सूक्ष्म और भावपूर्ण चित्रण किया गया है, जो तत्कालीन समाज, संस्कृति और जीवन शैली के अनेक पहलुओं को उजागर करता है।

राजाओं के दरबारी जीवन, उनकी दिनचर्या तथा वैभवपूर्ण जीवन शैली का भी सुंदर चित्रण इन भित्ति चित्रों में देखने को मिलता है। युद्ध के दृश्य उस समय की सैन्य शक्ति, रणनीति और साहसिक परंपराओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं।

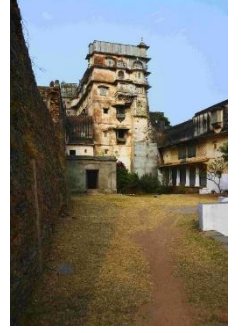


Figure 2-1 जूना महल के बाहर का दृश्य

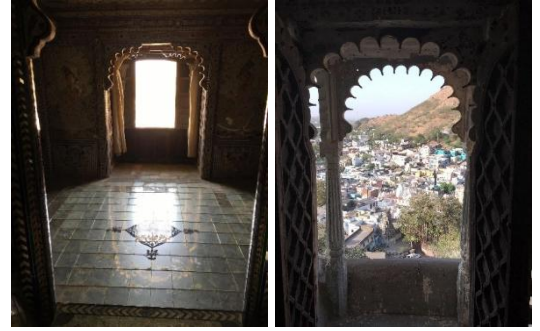


Figure 2-2 जूना महल के अंदर के झरोखे



Figure 2-3 जूना महल की छतरी



Figure 2-4 जूना महल के काच कक्ष में बना गणगौर चित्र और कक्ष में बना पशु चित्र

इन सभी विषयों के बीच शृंगारिक चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जो मानवीय भावनाओं, प्रेम और सौंदर्य की सूक्ष्म अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं। यह विविधता जूना महल को केवल एक स्थापत्य संरचना न बनाकर एक जीवंत सांस्कृतिक ग्रंथ का स्वरूप प्रदान करती है, जहाँ प्रत्येक दीवार अतीत की कहानी को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है।

शृंगारिक चित्रों का विशेष महत्त्व

महल की 5वीं मंजिल पर स्थित चित्र विशेष रूप से शृंगार रस पर आधारित हैं। इन चित्रों में स्त्री और पुरुष के संबंधों को अत्यंत सौम्यता और मर्यादा के साथ दर्शाया गया है।

यहाँ प्रेम को केवल शारीरिक आकर्षण के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह चित्र भारतीय जीवन-दर्शन के उस सिद्धांत को प्रतिबिंबित करते हैं, जिसमें 'काम' को एक महत्वपूर्ण पुरुषार्थ माना गया है।

चित्रकला की शैली और तकनीक

जूना महल की चित्रकला में रेखाओं की कोमलता और संतुलन प्रमुख विशेषताएँ हैं। चित्रों को छोटे-छोटे खंडों में विभाजित किया गया है, जहाँ प्रत्येक खंड एक स्वतंत्र दृश्य प्रस्तुत करता है। इन चित्रों में खनिज रंगों का उपयोग किया गया है, जिससे वे लंबे समय तक सुरक्षित रहते हैं। लाल, हरा, नीला और सुनहरा रंग प्रमुख रूप से उपयोग में लाए गए हैं, जो विभिन्न भावनाओं और प्रतीकों को दर्शाते हैं। पृष्ठभूमि में वास्तुकला, प्रकृति और सजावटी तत्वों का सूक्ष्म चित्रण चित्रों को अधिक यथार्थ और आकर्षक बनाता है।

काँच शिल्प की विशेषता

जूना महल की काँच और दर्पण कारीगरी राजस्थान की पारंपरिक शिल्पकला का एक अत्यंत उत्कृष्ट और दुर्लभ उदाहरण मानी जाती है। यह महल केवल अपनी मजबूत और सुरक्षित संरचना के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी आंतरिक सजावट की सूक्ष्मता और कलात्मक सौंदर्य के लिए भी विश्वविख्यात है। इसकी काँच शिल्प परंपरा उस समय की तकनीकी दक्षता और सौंदर्यबोध दोनों को एक साथ प्रस्तुत करती है।

महल के भीतर 'काँच की ओरी' और 'नगीना ओरी' जैसे विशेष कक्ष पाए जाते हैं, जहाँ दीवारों, छतों और कई स्थानों पर अत्यंत बारीकी से काँच की जड़ाई की गई है। छोटे-छोटे दर्पणों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि जब किसी एक दीपक का प्रकाश भी इन पर पड़ता है, तो वह हजारों प्रतिबिंबों में विभाजित होकर पूरे कक्ष को एक तारों भरे आकाश जैसा रूप प्रदान करता है। यह तकनीक 'दर्पण जड़ाई' या 'काँच मोज़ेक' शैली का एक अद्भुत उदाहरण है, जिसमें प्लास्टर के साथ काँच के टुकड़ों को जोड़कर फूलों, बेलों और ज्यामितीय आकृतियों का निर्माण किया गया है।

इसके अतिरिक्त महल में रंगीन काँच का भी सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है। नीले, हरे और लाल रंग के काँच को विशेष रूप से खिड़कियों और झरोखों में लगाया गया है। जब सूर्य की किरणें इन रंगीन काँचों से होकर भीतर प्रवेश करती हैं, तो पूरा वातावरण रंगीन आभा से भर जाता है और भित्ति चित्रों की सुंदरता और भी अधिक निखर जाती है।

महल का 'चीनी गोखड़ा' इस कारीगरी का एक और महत्वपूर्ण भाग है, जहाँ विदेशी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ दीवारों में काँच के साथ-साथ विदेशी चीनी मिट्टी की प्लेटों का उपयोग किया गया है, जो उस समय के सांस्कृतिक आदान-प्रदान को दर्शाता है।

विशेष बात यह है कि जूना महल में काँच और चित्रकला एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। कई चित्रों को काँच के फ्रेमों से सजाया गया है, जिससे उनकी सुंदरता और अधिक बढ़ जाती है।

यह कारीगरी उस युग की है जब आधुनिक प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी, इसलिए काँच का उपयोग केवल सजावट के लिए नहीं बल्कि प्रकाश को नियंत्रित और परावर्तित करने के लिए भी किया जाता था। यह तकनीक उस समय की वैज्ञानिक सोच और कलात्मक दृष्टि का प्रमाण है।

जूना महल की काँच कारीगरी आज भी दर्शकों को आश्चर्यचकित करती है और यह 750 वर्षों पुरानी धरोहर को जीवंत प्रकाश और अद्भुत सौंदर्य के साथ प्रस्तुत करने वाली एक अनुपम सांस्कृतिक विरासत है।



Figure 2-5 सरस्वती भंडार कक्ष में बने राजपरिवार के व्यक्ति चित्र

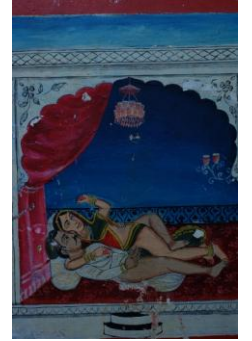


Figure 2-6 समरप्रयाणकक्ष में बने कामक्रीड़ा के कुछ चित्र

राजसी जीवन और सांस्कृतिक परंपरा

जूना महल केवल स्थापत्य और कला का केंद्र नहीं था, बल्कि यह राजसी जीवन का प्रमुख केंद्र भी था। यहाँ शाही समारोह, उत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। शासक और प्रजा के बीच घनिष्ठ संबंध भी इस महल के माध्यम से स्पष्ट होते हैं। लोकनृत्य, उत्सव और परंपराएँ यहाँ के जीवन का अभिन्न हिस्सा थीं।

दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण

जूना महल की चित्रकला भारतीय दर्शन की गहन और सूक्ष्म अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान करती है। इसमें जीवन के चार पुरुषार्थों— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—का संतुलित और सार्थक चित्रण देखने को मिलता है, जो भारतीय जीवन-दृष्टि की आधारशिला माने जाते हैं।

इन भित्ति चित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि मानव जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नैतिक कर्तव्य, आर्थिक संतुलन, प्रेम और आध्यात्मिक मुक्ति सभी का समन्वय आवश्यक है। यह चित्रकला जीवन के प्रत्येक पक्ष को एक समग्र दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देती है।

यह कलात्मक अभिव्यक्ति हमें यह संदेश देती है कि जीवन में संतुलन और सामंजस्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। किसी भी एक पक्ष की अधिकता जीवन के प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित कर सकती है। इसी कारण यहाँ प्रेम, सौंदर्य और आनंद को जीवन के अनिवार्य और महत्वपूर्ण अंग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जूना महल की चित्रकला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह एक दार्शनिक संदेश भी देती है, जो मानव जीवन को अधिक संतुलित, सार्थक और समृद्ध बनाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

वर्तमान स्थिति और संरक्षण

समय के साथ जूना महल की चित्रकला और संरचना प्रभावित हो रही है। नमी, धूल और उपेक्षा के कारण चित्रों की गुणवत्ता में कमी आ रही है। इस स्थिति को देखते हुए संरक्षण की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। वैज्ञानिक तकनीकों और जागरूकता के माध्यम से इस धरोहर को सुरक्षित रखा जा सकता है।

निष्कर्ष

जूना महल एक ऐसा स्थल है, जहाँ इतिहास, कला और दर्शन का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह महल केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

इसकी चित्रकला, स्थापत्य और काँच शिल्प भारतीय संस्कृति की समृद्धता को दर्शाते हैं। अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस धरोहर का संरक्षण करें और इसे आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँचाएँ।

अंततः, जूना महल भारतीय कला और संस्कृति का एक अमूल्य प्रतीक है, जो हमें हमारे अतीत से जोड़ते हुए भविष्य की दिशा भी दिखाता है।

संदर्भ:

1. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
2. महेश पुरोहित, डूंगरपुर (राजस्थान) द्वारा लिखित "हिस्ट्री ऑफ जूना महल" पर आधारित
3. <https://www.remoteasiaphoto.com/photo/juna-mahal-erotic-paintings-cupboard/>
4. https://commons.wikimedia.org/wiki/Category:Kamasutra_paintings_in_Juna_Mahal,_Dungarpur#
5. मल्लिका बोहरा - डूंगरपुर राज्य की भित्ति चित्रांकन परम्परा समाज एवं सांस्कृति प्रतिभा प्रशासन, नई दिल्ली-2009,
6. डॉ. आर के वशिष्ठ: मेवाड़ की चित्राळूज परम्परा
7. डॉ. निर्मला जैन, रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र